रिकार्ड– दूर देश का रहने वाला.....ओमशांति प्रातःक्लास 18–5–67
रुहानी बच्चों को रुहानी बाप समझाते हैं स्कूल अथवा कालेज में कोई तो अच्छी रीति दिल लगाकर पढ़ते हैं। समझते हैं कि पढ़कर अच्छा पद पाना है। हम स्टुडेंट्स हैं। यहां भी बच्चे जानते हैं कि बरोबर हमको पढ़ाने वाला बेहद का बाप है। बेहद का वर्सा देते हैं। बाप ने समझाया है कि .....नर से नारायण बनने की सच्ची2 कथा कहो, सत्य नारायण की कथा कहो। तीजरी की कथा कहो। भक्ति में यह सब कथायें जन्मजन्मांतर सुनी हैं। तीजरी की कथा,अमरनाथ की कथा आदि का कोई अर्थ नहीं समझते हैं। वो है अमरपुरी ,यह है मृत्युलोक। यह भी तुम्हीं समझते हो। तुम्हारे में भी कोई तो बिल्कुल ही नहीं जानते हैं। पूछेंगे अमरपुरी कहां है?तो कह देंगे उपर में। जो कायदे अनुसार नहीं पढ़े हैं भल सामने बैठे हैं ;परंतु धारणा नहीं है क्या पढ़ रहे हैं बुद्धि ही में नहीं आता है। ऐसे2 को भी कई ब्राह्मणियां ले आती हैं। तो भक्ति मार्ग में जन्मजन्मांतर तुम झूठी कथायें सुनते आये हो। बहुत प्यार से सुनते थे। जैसे2 हालात वाले लोग होंगे सुनने वाले वैसे2 ही मंडप बनवायेंगे बैठकर सुनने के लिए। बाप तो कहते हैं मैं तो बिल्कुल ही साधारण तन में आता हूँ। मनुष्यों की बुद्धि तो बिल्कुल ही मारी हुई है। जिनको ही आधा कल्प बुलाते हैं वही आकर पढ़ाते हैं यह कोई को भी मालूम नहीं है। अभी तो तुम प्रैक्टिकल में पढ़ रहे हो। यह है ईश्वरीय पढ़ाई। ईश्वर खुद पढ़ाते हैं। गीता में भगवानोवाच्य है ;परंतु कृष्ण का नाम डालने कारण सारी खंडन हो गई है। बाप कहते हैं कि भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते2 सुनते2 तुम रावण सम्प्रदाय के बन गये हो। अकासुर, बकासुर ,हरण्याकश्यप अक्षर किसने कहे?बाप ने कहा है ना। वो तो सिर्फ शास्त्र पढ़ते रहते हैं। गायन तो अभी का है ना। बाप बैठ समझाते हैं कि यह सब क्या है। मनुष्य होकर अपने बाप को नहीं जानते हो। बच्चा बाप2 कहे और बाप के आक्युपेशन को ही नहीं जाने तो जनावर हुआ ना। बाप कहते हैं यह सारा है ड्रामा। बच्चों को बाप समझाते हैं कि कैसे तुम्हारी दुर्गति हुई है। फिर कैसे बाप आकर सदगति करते हैं। तो ऐसे बाप की सुननी चाहिए ना। सुनेंगे ही नहीं तो सदगति ही कैसे पावेंगे?बहुत समझते हैं कि हम तो होशियार हो गये हैं। बाबा तो रोज वो ही ज्ञान देते हैं। अच्छे2 बच्चे जिनको 3/2 नम्बर में रखा जाता है देह का अहंकार आने पर फिर मुरली भी नहीं सुनते हैं। बाप खुद कहते हैं कि अच्छे2 बच्चे भी मुझे कायदे अनुसार याद नहीं करते हैं। भूले हुये हैं। भक्तिमार्ग में भी जो अच्छे2 भक्त हैं वो अपने ईष्ट देव को याद करते हैं। जैसे मीरा कृष्ण को याद करती थी। हनुमान राम को याद करते थे। भक्ति में तो सिर्फ दर्शन की ही प्यास होती है। गंगा के पुजारी होंगे ,बहुत प्रेम से कहेंगे गंगा पतित–पावनी..... । यह है ही भक्तिमार्ग। रावण राज्य। कितने छी2 मनुष्य हैं। बंदर सम्प्रदाय। भगवान कौन है यह समझते नहीं हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं। उंच ते उंच है भगवान। अच्छा, सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा का नाम दे दिया है। अब ब्रह्मा वहां क्या करते हैं?प्रजापिता ब्रह्मा तो यहां पर चाहिए ना। ब्राह्मण यहां पर चाहिए। रुद्र ज्ञान यज्ञ में ब्राह्मण ही चाहिए। रुद्र तो ठहरा सेठ। यज्ञ रचने वाला। भल करके निराकार है ;परंतु सेठ तो ठहरा ना। ज्ञान यज्ञ रचते हैं ज्ञान देने के लिए। मनुष्य रुद्र यज्ञ रचते हैं। एक तो मिट्टी के सालिग्राम बनाते हैं। फिर रुद्र पूजा होती है। मिट्टी के सालिग्राम बनाकर उनकी पूजा आदि कर उत्पत्ति कर फिर तोड़–फोड़ डालते हैं। सबकी पूजा होती है। देवियों की पूजा होती है। देवियों की भी ऐसी ही होती है। उनको खिलाकर–पिलाकर फिर डुबो देते हैं। शिवबाबा को जन्म भी देते हैं फिर तोड़फोड़कर खलास कर देते हैं। यह है सब भक्तिमार्ग। सालिग्राम आदि तो रोज बनाते हैं और तोड़ते रहते हैं। देवियों को फिर ऐसे नहीं करते हैं। उनको फिर 5/7 रोज रखते हैं। सालीग्राम तो रोज बनाते हैं और तोड़ देते हैं। यह भक्तिमार्ग कितना नानसेंस मार्ग है। तब ही तो सभी ने दुर्गति को पाया है। सब मनुष्य पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। सब काम बेअक्ली का करते हैं। किसी की भी बुद्धि में नहीं आता है कि हम कर ही क्या रहे हैं?बायोग्राफी.....

भारत में ही ब्लाइंड फेथ गाया जाता है। शास्त्रों में है ना अंधों की औलाद अंधे। अब तुम तो हो भगवान की औलाद। वो है रावण की औलाद ;परंतु अपने को कोई समझते थोड़े ही हैं। बिल्कुल ही बेसमझ हैं। जैसे छोटे बच्चे गुड़ियां बनाकर फिर तोड़ देते हैं। उनसे भी बदतर हैं। इसको ही कहा जाता है अंधश्रद्धा की पूजा। कितना खर्चा होता है मंदिरों आदि पर। बाप कहते हैं कि मैं तुमको कितना साहुकार बनाकर जाता हूँ। तुम्हारे में से भी कोई तो बहुत अच्छा पद पाते हैं। कोई कम। भल वहां पर सुख सब हैं ;परंतु नम्बरवार पद तो है ना। पुरुषार्थ करना चाहिए ना। भविष्य 21जन्मों के लिए हम उंच पद पावेंगे। वो ही फिर कल्प2 पाते रहेंगे। ना पढ़ने पर नतीजा क्या निकलेगा?वो भी बात बताते हैं। यह है ईश्वरीय लाटरी। कल्प2 के लिए पढ़ाई की रेस है। जैसे घुड़दौड़ होती है ना। तुम बच्चों को भी अश्व कहा जाता है। राजस्व अश्वमेध यज्ञ है ना। तुम जानते हो कि इस रथ में परमात्मा विराजमान है। रेस भी आत्मा करती है। परमपिता परमात्मा आकर पढ़ाते भी हैं। रेस भी करवाते हैं। रेस भी कराते हैं। यह तुम्हारी रेस एक ही बार होती है। बाप कहते हैं मनमनाभव। बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। बहुत फर्स्टक्लास लाटरी मिल जावेगी। 21जन्मों के लिए तुम एवर हेल्दी और एवर वेल्दी बन जावेंगे। सजा खाने वाले का पद ही भ्रष्ट हो जाता है। ऐसी पढ़ाई पढ़ते हुये भी फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। ध्यान ही नहीं देते हैं। कई तो समझते हैं कि वो ही बातें हैं। 5/7रोज अगर मुरली नहीं पढ़ी तो हर्जा ही क्या है ;परंतु बाबा कहते हैं कि कब2 मुरली में प्वाइंट्स ऐसे2 निकलते हैं जो एकदम खड़े हो जाते हैं। इसलिए ही बाबा ताकीद करते हैं कि जो2 अच्छे2 बच्चे हैं उनको तो मुरली रेग्युलर पढ़नी चाहिए। स्कूल में कब2 जावेंगे तो बाप भी और टीचर भी क्या समझेंगे?कहेंगे यह तो मूर्ख बच्चा है तो जो पढ़ता ही नहीं है। तकदीर में नहीं है। बाप तो तदबीर करवाते हैं। बाप आकर बच्चों को शिक्षा देते हैं। युक्ति रचते हैं। बाप समझाते रहते हैं कि जो भी कोई आवे तो उनको बाप का परिचय दो। यहां पर भक्ति की तो बात ही नहीं। हम लोग कब भी शिवाय वा कृष्णाय नमः आदि नहीं कहेंगे। कब भी मंदिर में नहीं जावेंगे। घंटा आदि नहीं बजावेंगे। आगे तो सब करते थे। अब भक्ति पूरी हुई है। बाप ने कहा है कि अभी मैं तुमको भक्ति का फल देने आया हूँ। भक्ति से है दुर्गति। ज्ञान से है सदगति। भक्ति से ही भारत ने दुर्गति को पाया है। पुकारते हैं कि हे बाबा हम पतित बन गये हैं। आप पावन बनाने आओ। शिव जयंति भी भारत में ही मनाते हैं। बाप कहते हैं कि अब तो मैं यहां ही बैठा हूँ। बाहर भी कहने जा नहीं सकता हूँ। यह मधुबन कुटिया छोड़कर बाहर जाने का हुक्म भी बंद होता जाता है। जिनको लेना होगा वो आ जावेंगे। बच्चे खुद पढ़कर पढ़ाकर ले आते हैं हेडऑफिस में। यह ठीक है। बाबा कहते हैं कि दरवाजे से बाहर भी नहीं निकलो ;क्योंकि कामेषु क्रोधेषु होते हैं ना। समझते हैं कि इनको सिखाने वाले को तो गोली मार देवें। ऐसे2 खयालात से भी आते हैं। शूट करने में देरी थोड़े ही लगती है। बापू गांधी को भी शूट कर दिया। शिवबाबा कहते हैं कि मैं बापू हूँ। मुझे (तो) शूट कर नहीं सकेंगे। तुमको शूट कर लेंगे। क्रोधी तो बहुत ही होते हैं ना। कहते थे कि इनको (ब्रह्मा) कोई मार दिखावे तो 5000रुपया देंगे। ऐसे बहुत रिश्वत से मार दिखाते हैं। बाप समझाते हैं कि यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। किसी को भी मरवाने में देरी नहीं करते हैं। अकासुर, बकासुर यह सभी अभी के ही नाम हैं। बाप का बन फिर भी असुर बन जाते हैं। खून से लिखकर भी देते हैं। फिर 5/7रोज में देखो तो हैं ही नहीं। इस समय तो तमोप्रधान माया है। बाप भगवान हमको पढ़ाते हैं कि कितनी खुशी होनी चाहिए। भगवानोवाच्य भी है ना। सिर्फ नाम बदली कर दिया है। कहते हैं कि मैं इन साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ। साधू लोग यह अक्षर पढ़ते भी हैं ;परंतु यह थोड़े ही समझते हैं कि यह हमारे लिए ही है कि हम ही पतित हैं। बाप को आकर हमारा उद्धार करना है। जरा भी अपने को पतित नहीं समझते हैं। बाप कहते

यह सब हैं भक्ति सिखाने वाले। उनसे मुक्तिधाम में कोई जा नहीं सकते। मेरे से मिल नहीं सकते। मनुष्य तो सिर्फ कह देते हैं कि फलाना पार निर्वाण गया। लीन हो गया। कृष्ण के भक्तों से कृष्ण के लिए पूछते हैं तो कहते हैं कि वो तो है ही है। जिधर भी देखो कृष्ण ही कृष्ण है। राधा के भक्त फिर कहेंगे कि जिधर देखो राधा ही राधा है। एक तरफ कहते हैं कि सब ईश्वर ही के रूप हैं। वो हो गया निराकार। फिर दूसरी तरफ कृष्ण साकार के लिए कह देते हैं। जिनसे जो मत मिली उसी को फालो कर लेते हैं। अब कहते हैं मानव मत। वो भी आसुरी मत है। और क्या बनाती है?काली का चित्र कितना भयानक है। बस काली मां ,काली मां कहकर एकदम मस्त हो जाते हैं। काली के बहुत भक्त हैं। बकरे की वहां पर बलि चढ़ती ही रहती है। भारत को ही आदमखोर भी कहा जाता है। क्रिश्चियन्स लोगों ने आकर एकदम आदमखोरी बंद कर दी। नहीं तो बहुत मनुष्यों की बलि चढ़ाते थे। तो बाप समझाते हैं कि कितने धर्मभ्रष्ट–कर्मभ्रष्ट बन गये हैं। मेरा जन्म ही मगध देश में होता है। जहां के मनुष्य तो मगरमच्छ सदृश होते हैं। गउ का (मांस) भी खाते हैं। बहुत बड़े2 आदमी भी खाते हैं जैसे कि वहां की रस्म ही होगी। उस पर ही चलना पड़े। कोई ईरान का बादशाही आवेगा तो उनकी क्या खातिरी करेंगे?तुमको मालूम है?सारा का सारा उंट उबालकर मिर्च–मसाला डाल कर वो सारा उनके खाने के लिए जाकर रखेंगे। ऐसी गंदी दुनियां है कि बात मत पूछो। अखबार में पढ़ा था कि भूख लगी तो एक कुत्ते को ही खाने लगा। भूख लगी तो फिर क्या करेगा?जो आया सो ही खाया। खाना नहीं मिलेगा तो एक/दो को काटकर भी खावेंगे। लड़ाई में और कुछ नहीं मिलता है तो अपने घोड़े को भी मारकर खाकर अपना2 पेट भर लेते हैं। अब तुम अपने स्वर्ग को याद करो। तुम स्वर्गवासी थे फिर 84जन्मों के बाद अब नर्कवासी हो। अब तुम संगम पर हो। फिर स्वर्गवासी बनना है। एक ही घर में एक स्वर्गवासी बनेगा और सम्बंधी नर्कवासी बनना ही पसंद करेंगे। बाप का भी नहीं मानते हैं। बाप बच्चे को कहेंगे कि पवित्र बनो। एकदम ही कह देंगे कि हम नहीं बनेंगे। बूढ़ा बाप होगा तो फट कह देंग कि ऐसे कहा तो टांग तोड़ दूंगा। ऐसे भी कह देते हैं। यहां ज्ञान लेते2 फिर गुम हो जाते हैं। पढ़ते ही नहीं हैं। 7रोज में एक/दो बार आते हैं। बाप कहेंगे कि तुम तो बहुत कपूत हो। नहीं पढ़ेंगे तो जरूर निंदा करवाते होंगे। चलन शैतानी होगी। ना पढ़ेंगे तो पद भी भ्रष्ट होगा। और ही जास्ती अपना नुकसान करेंगे। पढ़ाई भी बहुत सहज है। सिर्फ अल्फ और बे। बस यही गांठ बांध लो। अच्छा बे भी याद नहीं पड़ता है तो छोड़ दो। सिर्फ अल्फ को ही याद करो। पढ़ेंगे तो अच्छा ही पद पावेंगे। योग में रहने वाले की बुद्धि में नालेज भी आटोमेटिकली आ जाती है। बाप कहते हैं कि सिर्फ अल्फ को याद करो। कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। अरे, बाप जो तुमको विष्णुपुरी का मालिक बनाते हैं उनको भूल जाते हो। बेहद के बाप ने तुमको एडाप्ट किया है विश्व का मालिक बनाने। सो बनेंगे तब जबकि उनकी श्रीमत पर चलेंगे। कोई तो 5/7मास भी समझकर विलायत में जाते हैं तो खेल ही खलास हो जाता है। कोई तो फिर बहुत अच्छे नियमो पर भी चलते हैं। बहाने तो अनेक प्रकार के कर सकते हैं। इसमें कोई पाप नहीं है। कोई पूछते हैं कि बाबा रिश्वत बिना काम नहीं चलता है। फिर यह पाप तो नहीं है?वो भी करना ही पड़ेगा। नहीं खावेंगे तो तुम्हारी कमाई नहीं होगी। फिर कोई पद भी नहीं देंगे। नौकरी ही से निकाल दें। रिश्वत खाने वाले तो बहुत होते हैं ना। युक्तियां तो सारी बच्चों को समझाते ,सिखाते रहते हैं। ....रमजबाज तो है ना। तुमको पढ़ा रहे हैं। बाप आये ही हैं सबको वापस ले जाने। पहले2 बात ही यह समझाओ कि यह है ज्ञान। यह भक्ति नहीं है। हमको ज्ञान सुनाने वाला बाप ही है। लिखा हुआ है गीता ज्ञान दाता शिव भगवानोवाच्य। वो फिर कह देते हैं कि शिव परमात्मा और कृष्ण दोनों एक ही हैं। अरे, सबका पोजिशन एक ही केस हो सकता है। तो यह ज्ञान सारा तुम्हारे पास ही है। ओम।